लवथवती विक्राळा (शंकराची आरती)

इन पाठों के बारे में

स्रोत — हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।

लिप्यन्तरण — रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

लवथवती विक्राळा (शंकराची आरती)

प्रकार	आरती
देवता	भगवान शिव
संस्करण	मिलान किया गया पाठ
परम्परा	अनेक परम्पराओं में प्रचलित
स्रोत	श्रीराम उपासना ग्रंथ — गणेश बाबाजी फडके तासगांवकर, तासगांव, 1910 — scan pages 59–60 (printed pp. 53–54), Marathi Wikisource revisions 192186, 192185
आभार	पाठ: श्रीराम उपासना ग्रंथ (1910), मराठी विकिस्रोत योगदानकर्ता (CC BY-SA 4.0)। मिलान, सार और अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम।
कॉपीराइट	Text in the public domain (Samarth Ramdas, 17th century). Transcription from Marathi Wikisource, CC BY-SA 4.0.

जयदेव जयदेव जय श्रीशंकरा ।

jayadev jayadev jay śrīśaṃkarā |

आरती ओंवाळूं तुज विश्वंभरा ॥ जयदेव० ॥ ध्रु० ॥

āratī oṃvāḷūṃ tuj viśvaṃbharā || jayadeva0 || dhru0 ||

लवथवती विक्राळा ब्रह्मांडमाळा ।

lavathavatī vikrāḷā brahmāṃḍamāḷā |

विषे कंठ काळा त्रिनेत्रीं ज्वाळा ॥

viṣe kaṃṭh kāḷā trinetrīṃ jvāḷā ||

लावण्य सुंदर मस्तकीं बाळा ॥

lāvaṇya suṃdar mastakīṃ bāḷā ||

तेथुनियां जळ निर्मळ वाहे झुळझुळां ॥ जय० ॥ २ ॥

tethuniyāṃ jaḷ nirmaḷ vāhe jhuḷajhuḷāṃ || jaya0 || 2 ||

कर्पूरगौरा भोळा नयनीं वीशाळा ॥

karpūragaurā bhoḷā nayanīṃ vīśāḷā ||

अर्धांगीं पार्वती सुमनांच्या माळा ॥

ardhāṃgīṃ pārvatī sumanāṃcyā māḷā ||

विभुतीचें उधळण शितिकंठ नीळा ॥

vibhutīceṃ udhaḷaṇ śitikaṃṭh nīḷā ||

ऐसा शंकर शोभे उमा वेल्हाळा ॥ जयदेव० ॥ ३ ॥

aisā śaṃkar śobhe umā velhāḷā || jayadeva0 || 3 ||

व्याघ्रांबर फणिवरधर सुंदर मदनारी ॥

vyāghrāṃbar phaṇivaradhar suṃdar madanārī ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

पंचानन मुनिजनमनमोहन सुखकारी ॥

paṃcānan munijanamanamohan sukhakārī ||

शतकोटीचें बीज वाचे उच्चारी ।

śatakoṭīceṃ bīj vāce uccārī |

रविकुळटीळक रामदासाअंतरीं ॥ जयदेव ॥ ४ ॥

ravikuḷaṭīḷak rāmadāsāaṃtarīṃ || jayadev || 4 ||

अर्थ

ध्रुवपद में विश्वंभर शंकर की आरती उतारी जाती है। चरणों में ब्रह्मांड की माला धारण किए विकराल शिव, विष से काला कंठ, त्रिनेत्र में ज्वाला, मस्तक पर चंद्र और उससे बहती निर्मल गंगा; कर्पूर-गौर, भोले, विशाल नेत्र, अर्धांगिनी पार्वती, फूलों की माला और विभूति का लेप; व्याघ्रांबर, सर्पधारी, पंचानन मदनारि जो मुनियों का मन मोहते हैं; उनका बीजमंत्र बोलने वाला शतकोटि फल पाता है; रविकुलतिलक राम को रामदास अंतर में धारण करते हैं।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।